२. चप्पल

– *कमलेश्वर*

कहानी बहुत छोटी-सी है । मुझे ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टिट्यूट की सातवीं मंजिल पर जाना था । गाड़ी पार्क करके आई.सी.यू. में चला तो मन बहुत ही दार्शनिक हो उठा था । कितना दुख और कष्ट है इस दुनिया में...लगातार एक लड़ाई मृत्यु से चल रही है...और उसके दुख और कष्ट को सहते हुए लोग सब एक-से हैं । दर्द और यातना तो दर्द और यातना ही है-इसमें इनसान और इनसान के बीच भेद नहीं किया जा सकता । दुनिया में हर माँ के दूध का रंग एक है । खून और आँसुओं का रंग भी एक है । दूध, खून और आँसुओं का रंग नहीं बदला जा सकता...शायद उसी तरह दुख, कष्ट और यातना के रंगों का भी बँटवारा नहीं किया जा सकता।

मुझे अपने उस मित्र की बातें याद आईं, जिसने मुझे संध्या के संगीन ऑपरेशन की बात बताई थी और उसे देख आने की सलाह दी थी । उसी ने मुझे आई.सी.यू. में संध्या के केबिन का पता बताया था । आठवें फ्लोर पर ऑपरेशन थियेटर्स हैं और सातवें पर संध्या का आई.सी.यू.। मेजर ऑपेरशन में संध्या की बड़ी आँत काटकर निकाल दी गई थी और अगले अड़तालीस घंटे क्रिटिकल थे...

रास्ता इमरजेंसी वार्ड से जाता था । एक बेहद दर्दभरी चीख़ इमरजेंसी वार्ड से आ रही थी... वह दर्दभरी चीख तो दर्दभरी चीख ही थी । कोई घायल मरीज असह्य तकलीफ से चीख रहा था । उस चीख से आत्मा दहल रही थी... चीख और दर्द की चीख में क्या अंतर था ! दूध, खून और आँसुओं के रंगों की तरह चीख की तकलीफ भी तो एक-सी थी । उसमें विषमता कहाँ थी ?

मेरा वह मित्र जिसने मुझे संध्या को देख आने की फर्ज अदायगी की तरह बोला था-अपना क्या है ? रिटायर होने के बाद गंगा किनारे एक झोंपड़ी डाल लेंगे । आठ-दस ताड़ के पेड़ लगा लेंगे... मछली मारने की एक बंसी... दो चार मछलियाँ तो दोपहर तक हाथ आएँगी ही... रात भर जो ताड़ी टपकेगी; उसे फ्रिज में रख लेंगे...?

और क्या.. मॉडर्न साधु की तरह रहेंगे ! और क्या चाहिए.. पेंशन मिलती रहेगी और माया-मोह क्यों पालें ? न कोई दुख, न कोई कष्ट.. लेकिन तुम जाके संध्या को देख जरूर आना.. वह क्रिटिकल है..

मेरा मित्र अपने भविष्य के बारे में कितना निश्चिंत था, यह देखकर मुझे अच्छा लगा था ।

परिचय

जन्म : १९३२, मैनपुरी (उ.प्र.)
मृत्यु : २००७, फरीदाबाद (उ.प्र.)
परिचय : कमलेश्वर जी बीसवीं शती के सबसे सशक्त लेखकों में से एक समझे जाते हैं । कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता, स्तंभ लेखन, फिल्म पटकथा जैसी अनेक विधाओं में आपने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया है । अपने ७५ साल के जीवन में १२ उपन्यास, १७ कहानी संग्रह और करीब १०० फिल्मों की पटकथाएँ लिखीं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'जॉर्ज पंचम की नाक', 'माँस का दरिया, 'इतने अच्छे दिन', 'कोहरा, 'कथा-प्रस्थान', 'मेरी प्रिय कहानियाँ' (कहानी संग्रह) 'जो मैंने जिया', 'यादों के चिराग', 'जलती हुई नदी' (संस्मरण) 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ', 'लौटे हुए मुसाफिर', 'डाक बंगला', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी', 'काली आँधी', वही बात', 'आगामी अतीत', 'सुबह-दोपहर-शाम', 'रेगिस्तान', 'कितने पाकिस्तान' (उपन्यास) ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत कहानी में कमलेश्वर जी ने अस्पताल के वातावरण, वहाँ के कर्मचारियों के व्यवहार आदि का विस्तृत वर्णन किया है । यहाँ 'एक पिता द्वारा अपने उस पुत्र की चप्पलों को सहेजना, जिसका एक पैर काट दिया गया है', इस घटना का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है ।

यह बात सोच-सोचकर मुझे अभी तक अच्छा लग रहा था, सिवा उस चीख के जो इमरजेंसी वार्ड से अब तक आ रही थी... और मुझे सता रही थी... इसीलिए लिफ्ट के आने में जो देरी लग रही थी; वह मुझे खल रही थी ।

आखिर लिफ्ट आई ! 'सेवन-सात' मैंने कहा और संध्या के बारे में सोचने लगा । दो-तीन वार्डबॉय तीसरी और चौथी मंजिल पर उतर गए ।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी तो कुछ लोग ऊपर जाने के लिए इंतजार कर रहे थे । इन्हीं लोगों में था वह पाँच साल का बच्चा- अस्पताल की धारीदार बहुत बड़ी-सी कमीज पहने हुए... शायद उसका बाप, वह जरूर ही उसका बाप होगा, उसे गोद में उठाए हुए था... उस बच्चे के पैरों में छोटी-छोटी नीली हवाई चप्पलें थीं जो गोद में होने के कारण उसके छोटे-छोटे पैरों में उलझी हुई थीं ।

अपने पैरों से गिरती हुईं चप्पलों को धीरे से उलझाते हुए बच्चा बोला-'बाबा ! चप्पल...।'

उसके बाप ने चप्पलें उसके पैरों में ठीक कर दीं । वार्ड बॉय व्हील चेयर बढ़ाते हुए बोला-''आओ, इसमें बैठो !'' बच्चा हल्के-से हँसा । वार्ड बॉय ने उसे कुर्सी में बैठा दिया... उसे बैठने में कुछ तकलीफ हुई पर वह कुर्सी के हत्थे पर अपने नन्हे-नन्हे हाथ पटकता हुआ भी हँसता रहा । दर्द का अहसास तो उसे भी था पर दर्द के कारण का अहसास उसे बिलकुल नहीं था । वह कुर्सी में ऐसे बैठा था जैसे सिंहासन पर बैठा हो... कुर्सी बड़ी थी और वह छोटा । वार्ड बॉय ने कुर्सी को पुश किया । वह लिफ्ट में आ गया । उसके साथ ही उसका बाप भी । उसका बाप उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरता रहा ।

लिफ्ट सात पर रुकी, पर मैं नहीं निकला । दो-एक लोग निकल गए । लिफ्ट आठ पर रुकी । यहीं ऑपरेशन थियेटर थे। दरवाजा खुला तो एक नर्स जिसके हाथ में सब पर्चे थे, उसे देखते हुए बोली-''आ गया तू !''

उस बच्चे ने धीरे से मुस्कराते हुए नर्स से जैसे कहा-'हाँ !' उसकी आँखें नर्स से शर्मा रही थीं और उनमें बचपन की बड़ी मासूम दूधिया चमक थी । व्हील चेयर एक झटके के साथ लिफ्ट से बाहर गई । नर्स ने उसका कंधा हल्के से थपका...।

'बाबा ! चप्पल'-वह तभी बोला-'मेरी चप्पल'...

उसकी एक चप्पल लिफ्ट के पास गिर गई थी । उसके बाप ने वह चप्पल भी उसे पहना दी । उसने दोनों पैरों की उँगलियों को सिकोड़ा

मौलिक सृजन

'यदि मैं डॉक्टर होता' तो ...'
अपने विचार लिखो ।

और अपनी चप्पलें पैरों में कस लीं ।

लिफ्ट बंद हुई और नीचे उतर गई ।

वार्ड बॉय बच्चे की कुर्सी को पुश करता हुआ ऑपरेशन थियेटर वाले बरामदे में मुड़ गया। नर्स उसके साथ ही चली गई । उसका बाप धीरे-धीरे उन्हीं के पीछे चला गया।

तब मुझे याद आया कि मुझे तो सातवीं मंजिल पर जाना था । संध्या वहीं थी । मैं सीढ़ियों से एक मंजिल उतर आया । संध्या के डॉक्टर पति ने मुझे पहचाना और आगे बढ़कर मुझसे हाथ मिलाया । हाथ की पकड़ में मायूसी और लाचारी थी । कुछ पल खामोशी रही । फिर मैंने कहा-''मैं कल ही वापस आया तभी पता चला। यह एकाएक कैसे हो गया ?''

''नहीं, एकाएक नहीं, ... चार घंटे ऑपरेशन में लगे...एंड यू नो, वी डॉक्टर्स आर वर्स्ट पेशेंट्स !'' वह संध्या के बारे में भी कह रहे थे। संध्या भी डॉक्टर थी ।

''आप तो सब समझ रहे होंगे । संध्या को भी एक-एक बात का अंदाज हो रहा होगा !'' मैंने कहा, ''लेकिन वह बहुत करेजसली बिहेव कर रही है !'' संध्या के डॉक्टर पति ने कहा-''बोल तो सकती नहीं... पल्स भी गर्दन के पास मिली... आर्टिफिशियल रेस्परेशन पर है... एक तरह से देखिए तो उसका सारा शरीर आराम कर रहा है और सब कुछ आर्टिफिशिल मदद से ही चल रहा है । संध्या के डॉक्टर पति ज्यादातर बातें मुझे मेडिकल टर्म्स में ही बताते रहे और मैं उन्हें समझने की कोशिश करता रहा । बीच-बीच मैं इधर-उधर की बातें भी करता रहा ।

''संध्या का भाई भी आज सुबह पहुँच गया...किसी तरह उसे जापान होते हुए टिकट मिल गया !'' उन्होंने बताया ।

''यह बहुत अच्छा हुआ ।'' मैंने कहा ।

''आप देखना चाहेंगे ?''

''हाँ, अगर पॉसिबिल हो तो ...।''

''आइए, देख तो सकते हैं। भीतर जाने की इजाजत नहीं है। वैसे तो सब डॉक्टर फ्रेंड्स ही हैं, पर ...।''

''नहीं-नहीं, वो ठीक भी है...।''

''वह बोल भी नहीं सकती... वैसे आज कांशस है... कुछ कहना होता है तो लिख के बता देती है ।'' उन्होंने कहा और एक केबिन के सामने पहुँचकर इशारा किया ।

मैंने शीशे की दीवार से संध्या को देखा। वह पहचान में ही नहीं आई । डॉक्टर और नर्स उसे अटैंड भी कर रहे थे और फिर इतनी नलियाँ

पठनीय

सड़क यातायात के लिए आवश्यक सावधानियों के बारे में पढ़ो और अपने सहपाठियों से चर्चा करो।

और मशीनें थीं कि उनके बीच संध्या को पहचानना मुश्किल भी था ।

संध्या होश में थी । डॉक्टर को देख रही थी । डॉक्टर उसका एक हाथ सहलाते हुए उसे कुछ बता रहा था । मैंने संध्या को इस हाल में देखा तो मन उदास हो गया । वह कितनी लाचार थी । बीमारी और समय के सामने आदमी लाचार होता है । कुछ कर नहीं पाता । मैंने मन-ही-मन संध्या के लिए प्रार्थना की । किससे की; यह नहीं मालूम। ऐसी जगहों पर आकर भगवान पर ध्यान जाता भी है ।

हम आई.सी.यू. से हटकर फिर बरामदे में आ गए । वहाँ बैठने के लिए कोई जगह नहीं थी । बरामदे बैठने के लिए बनाए भी नहीं गए थे । संध्या या डॉक्टर की बहन नीचे चादर बिछाए बैठी थी । डॉक्टर के कुछ दोस्त एक समूह में खड़े थे ।

''अभी तो बाद में, एक ऑपरेशन और होगा ।'' संध्या के डॉक्टर पति ने बताया-''तब छोटी आँत को सिस्टम से जोड़ा जाएगा । खैर, पहले वह स्टेबलाइज करे, फिर रिकवरी का सवाल है । इसमें ही करीब तीन महीने लग जाएँगे । उसके बाद मैं सोचता हूँ-उसे अमेरिका ले जाऊँगा !''

''यह ठीक रहेगा !''

इसके बाद हम फिर इधर-उधर की बातें करते रहे । मैं संध्या की संगीन हालत से उनका ध्यान भी हटाना चाहता था । इसके सिवा मैं और कर भी क्या सकता था और डॉक्टर के सामने यों खामोश खड़े रहना अच्छा भी नहीं लग रहा था ।

मैं खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया । बाहर लू चल रही थी । नीचे धरातल पर कुछ लोग आ-जा रहे थे । वे ऊपर से बहुत लाचार और बेचारे लग रहे थे । और मेरे मन से सबके शुभ के लिए सद्भावना की नदियाँ फूट रही थीं ।

लू के एक थपेड़े ने मेरा मुँह झुलसा दिया । डॉक्टर अपने चिंताग्रस्त शुभचिंतकों के समूह में खड़े थे और सबके चेहरे कुछ ज्यादा सतर्क थे ।

ब्लड प्रेशर गिर रहा है...

आई.सी.यू. में डॉक्टरों और नर्सों की आमदरफ्त से लग रहा था कि सामने कोई कठिन परिस्थिति है । कुछ देर बाद पता चला कि सूई कुछ ढीली हो गई थी । उसे ठीक कर दिया गया है और ब्लड प्रेशर ठीक से रिकॉर्ड हो रहा है । सबने राहत की साँस ली । मौत से लड़ना कोई मामूली काम नहीं है । ईश्वर ने तो मौत पैदा की ही है, पर मौत तो मनुष्य भी पैदा करता है । एक तरफ जीवन के लिए लड़ता है और दूसरी तरफ मौत भी बाँटता है-यह द्वंद्व ही तो जीवन है । यह द्वंद्व और द्वैत

लेखनीय

किसी एक पाठ के लिखने का उद्देश्य और दृष्टिकोण समझो । इस पाठ की संवाद के रूप में संक्षेप में प्रभावी लिखित प्रस्तुति करो ।

ही जीवित रहने की शर्त है और अद्‌वैत या समानता तक पहुँचने का साधन और आदर्श भी । आध्यात्मिक अद्‌वैत जब भौतिकता की सतह पर आता है और मनुष्य के प्रश्न सुलझाता है तभी तो वह समवेत समानता का दर्शन कहलाता है...।

मैंने पलटते हुए लिफ्ट की तरफ देखा । डॉक्टर मेरा आशय समझ गए थे लेकिन तभी राजनीतिज्ञ-से उनके कोई दोस्त आ गए थे । शुरू की पूछताछ के बाद वे लगभग भाषण-सा देने लगे-''अब तो अग्नि मिसाइल के बाद भारत दुनिया का सबसे शक्तिशाली तीसरा देश हो गया है और आने वाले दस वर्षों में हमें अब कोई शक्ति महाशक्ति बनने से नहीं रोक सकती । इंग्लैंड और फ्रांस की पूरी जनसंख्या से ज्यादा बड़ा है आज भारत का मध्यवर्ग । अपनी संपन्नता में...भारतीय मध्यवर्ग जैसी शक्ति और संपन्नता उन देशों के मध्यवर्ग के पास भी नहीं है...।''

तभी एक चिंताग्रस्त नर्स तेजी से गुजर गई और सन्नाटा छा गया । चिंता के भारी क्षण जब कुछ हल्के हुए तो मैंने फिर लिफ्ट की तरफ देखा। डॉक्टर साहब समझ गए-आपको ढाई -तीन घंटे हो गए । क्या-क्या काम छोड़ के आए होंगे...। और वे लिफ्ट की ओर बढ़े । लिफ्ट आई पर वह ऊपर जा रही थी । डॉक्टर साहब को मेरी खातिर रुकना न पड़े, इसलिए मैं लिफ्ट में घुस गया ।

लिफ्ट आठ पर पहुँची । वहाँ ज्यादा लोग नहीं थे पर एक स्ट्रेचर था और दो-तीन लोग । स्ट्रेचर भीतर आया उसी के साथ लोग भी । स्ट्रेचर पर चादर में लिपटा बच्चा पड़ा हुआ था । वह बेहोश था । वह ऑपरेशन के बाद लौट रहा था । उसके गालों और गर्दन के रेशमी रोएँ पसीने से भीगे हुए थे । माथे पर बाल भी पसीने के कारण चिपके हुए थे ।

उसका बाप एक हाथ में ग्लूकोज की बोतल पकड़े हुए था । ग्लूकोज की नली की सूई उसकी थकी और दूधभरी बाँह की धमनी में लगी हुई थी । उसका बाप लगातार उसे देख रहा था । वह शायद पसीने से माथे पर चिपके उसके बालों को हटाना चाहता था, इसलिए उसने दूसरा हाथ ऊपर किया पर उस हाथ में बच्चे की चप्पलें उसकी उँगलियों में उलझी हुई थीं । वह छोटी-छोटी नीली हवाई चप्पलें....।

मैंने बच्चे को देखा । फिर उसके निरीह बाप को ।

मेरे मुँह से अनायास निकल ही गया-''इसका''

''इसकी टाँग काटी गई है''-वार्ड बॉय ने बाप की मुश्किल हल कर दी ।

''ओह ! कुछ हो गया था ?'' मैंने जैसे उसके बाप से ही पूछा । वह मुझे देखकर चुप रह गया... उसके ओठ कुछ बुदबुदाकर थम गए...

श्रवणीय

कसरत करने से होने वाले लाभ सुनो और उनकी सूची बनाओ ।

लेकिन वह भी चुप नहीं रह सका। एक पल बाद ही बोला–''जाँघ की हड्डी टूट गई थी...।''

''चोट लगी थी ?''

''नहीं, सड़क पार कर रहा था...एक गाड़ी ने मार दिया ।'' वह बोला और मेरी तरफ ऐसे देखा, जैसे टक्कर मारने वाली गाड़ी मेरी ही थी।

फिर वह वीतराग होकर अपने बेटे को देखने लगा।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी। बच्चों का वार्ड इसी मंजिल पर था । लिफ्ट में आने वाले कई लोग थे। वे सब स्ट्रेचर निकाले जाने के इंतजार में बेसब्री से रुके हुए थे... वार्ड बॉय ने झटका देकर स्ट्रेचर निकाला तो बच्चा बोरे की तरह हिल उठा, अनायास ही मेरे मुँह से निकल गया–''धीरे–से ...।''

''ये तो बेहोश है; इसे क्या पता?'' स्ट्रेचर को बाहर पुश करते हुए वार्ड बॉय ने कहा ।

उस बच्चे का बाप खुले दरवाजे से टकराता हुआ बाहर निकला तो एक नर्स ने उसके हाथ की ग्लूकोज की बोतल पकड़ ली ।

लिफ्ट के बाहर पहुँचते ही उसके बाप ने उसकी दोनों नीली हवाई चप्पलें वहीं कोने में फेंक दीं...फिर कुछ सोचकर कि शायद उसका बेटा होश में आते ही चप्पलें माँगेगा, उसने पहले एक चप्पल उठाई... फिर दूसरी भी उठा ली और स्ट्रेचर के पीछे–पीछे वार्ड की तरफ जाने लगा ।

मुझे नहीं मालूम कि उसका बेटा जब होश में आएगा तो क्या माँगेगा, चप्पल माँगेगा या चप्पलों को देखकर अपना पैर माँगेगा ...।

बेसब्री से इंतजार करते लोग लिफ्ट में आ गए थे। लिफ्टमैन ने बटन दबाया । दरवाजा बंद हुआ। और वह लोहे का बंद कमरा नीचे उतरने लगा ।

—— o ——

संभाषणीय

हेल्मेट पहनकर वाहन चलाने से होने वाले लाभ बताओ ।

सदैव ध्यान में रखो

व्यक्ति को संवेदनशील होना ही चाहिए ।

शब्द वाटिका

दहलना = डर से काँपना, थर्राना
आँत = अँतड़ी
अदायगी = भुगतान, चुकता करना
धरातल = पृथ्वी की सतह, पृथ्वी
आमदरफ्त = आना–जाना
सतह = तल, वस्तु का ऊपरी भाग या विस्तार
निरीह = उदासीन, विरक्त, बेचारा, मासूम

मुहावरा

राहत की साँस लेना = छुटकारा पाना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

लेखक के मित्र की भविष्यकालीन योजनाएँ

(२) कृति पूर्ण करो :

स्ट्रेचर पर लेटे बच्चे की स्थिति

(३) कारण लिखो :

१. अंत में बच्चे के पिता द्वारा चप्पलें उठाना –

२. लेखक का ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट जाना–

३. बच्चे का बोरे की तरह हिल उठना –

४. बच्चे के पिता द्वारा दूसरा हाथ ऊपर करना –

(४) ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तरों में निम्न शब्द हों :

दार्शनिक, पर्चे, तीन महीने, नन्हे–नन्हे हाथ

(५) पाठ में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाओ ।

(६) कृति पूर्ण करो :

१. इनका रंग नहीं बदलता

२. इनका बँटवारा नहीं हो सकता

(७) संक्षेप में लिखो :

१. पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट के रुकने पर वहाँ का दृश्य: ----------

२. शीशे की दीवार से देखी हुई संध्या की स्थिति : ----------

MGS9IS

भाषा बिंदु **हिंदी–मराठी में प्रयुक्त निम्न समोच्चारित शब्दों के भिन्न अर्थ लिखो :**

गज .... तह .... ताक .... साल ....

ताई .... अवकाश .... खाली .... टीका ....

उपयोजित लेखन 'वृक्ष कटाई और सीमेंट का जंगल', विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन होमियोपैथी के जनक की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करके लिखो ।